

त्रिविक्रम के १८ वचन

दत्तगुरुकृपा से मैं सर्वसमर्थ तत्पर ।
श्रद्धावान को दूँगा सदैव आधार ॥१॥

मैं तुम्हारी सहायता करूँगा निश्चित ।
परन्तु मेरे मार्ग त्रि-नाथों को ही है ज्ञात ॥२॥

मत करना इस विषय में संदेह बिलकुल भी ।
न होने दूँगा घात तुम्हारा मैं कभी भी ॥३॥

प्रेमल भक्त के जीवन में ।
नहीं दूँदने बैठता हूँ पाप में ॥४॥

हो जाते ही मेरा एक दृष्टिपात ।
भक्त बन जायेगा पापरहित ॥५॥

मुझपर जिसका पूर्ण विश्वास ।
उसकी गलतियों को दुरुस्त करूँगा खास ॥६॥

साथ ही, सतायेगा जो मेरे भक्तों को ।
सज़ा अवश्य ही मैं दूँगा उसको ॥७॥

मेरे भक्तों का कोई भी प्रारब्ध ।
बदल दूँगा, तोड़ दूँगा या बनाऊँगा बाँध ॥८॥

न आने देते हुए जगदंबा के नियम को बाध ।
दुख से निकालकर बाहर, मार्ग दिखाऊँगा अगाध ॥९॥

सदैव मैं तुम्हारा उगता देव ।
नहीं ढल जाऊँगा, सौम्य कर दूँगा दैव ॥ १० ॥

पूर्ण श्रद्धा से मानो मन्नत, बहाओ पसीना, करो भक्ति परम ।
प्रसन्न होता हूँ तुम्हारी श्रद्धा से, तुम्हारे लिए मैं सर्वकाल सुखधाम ॥११॥

सभी मार्गों में, मुझे है प्रिय भक्ति ।
जन्म-जीवन-मृत्यु तुम्हारा न व्यर्थ होगा कुछ भी ॥१२॥

शरणागत होकर करेगा जो गजर ।
उसके जीवन में सुख अपरंपार ॥१३॥

मेरी भक्ति करने से, तुम्हें कौन रोकेगा ? ।
कामक्रोध यदि होंगे भरकर, मेरा नाम मेरे भक्त को तारेगा ॥१४॥

प्रेम से जो लेगा मेरा नाम, उसकी सभी कामनाएँ पूरी करूँगा ।
समृद्ध कर दूँगा उसका धाम, शान्ति सन्तोष भर दूँगा ॥१५॥

मेरे चरणों का निःसंदेह ध्यान करने पर ।
सहस्रकोटि संकट भाग जायेंगे डरकर ॥१६॥

सच्चा भक्त रहता है, दो चरणों में मेरे ।
तीसरा कदम मेरा कुचल देगा संकटों को तुम्हारे ॥१७॥

जहाँ पर है भक्ति पूर्ण श्रद्धा और प्रेम ।
वहाँ पर कर्तार मैं त्रिविक्रम ॥ १८ ॥



॥ हरि ॐ ॥ ॥ श्रीराम ॥ ॥ अंबज्ञ ॥